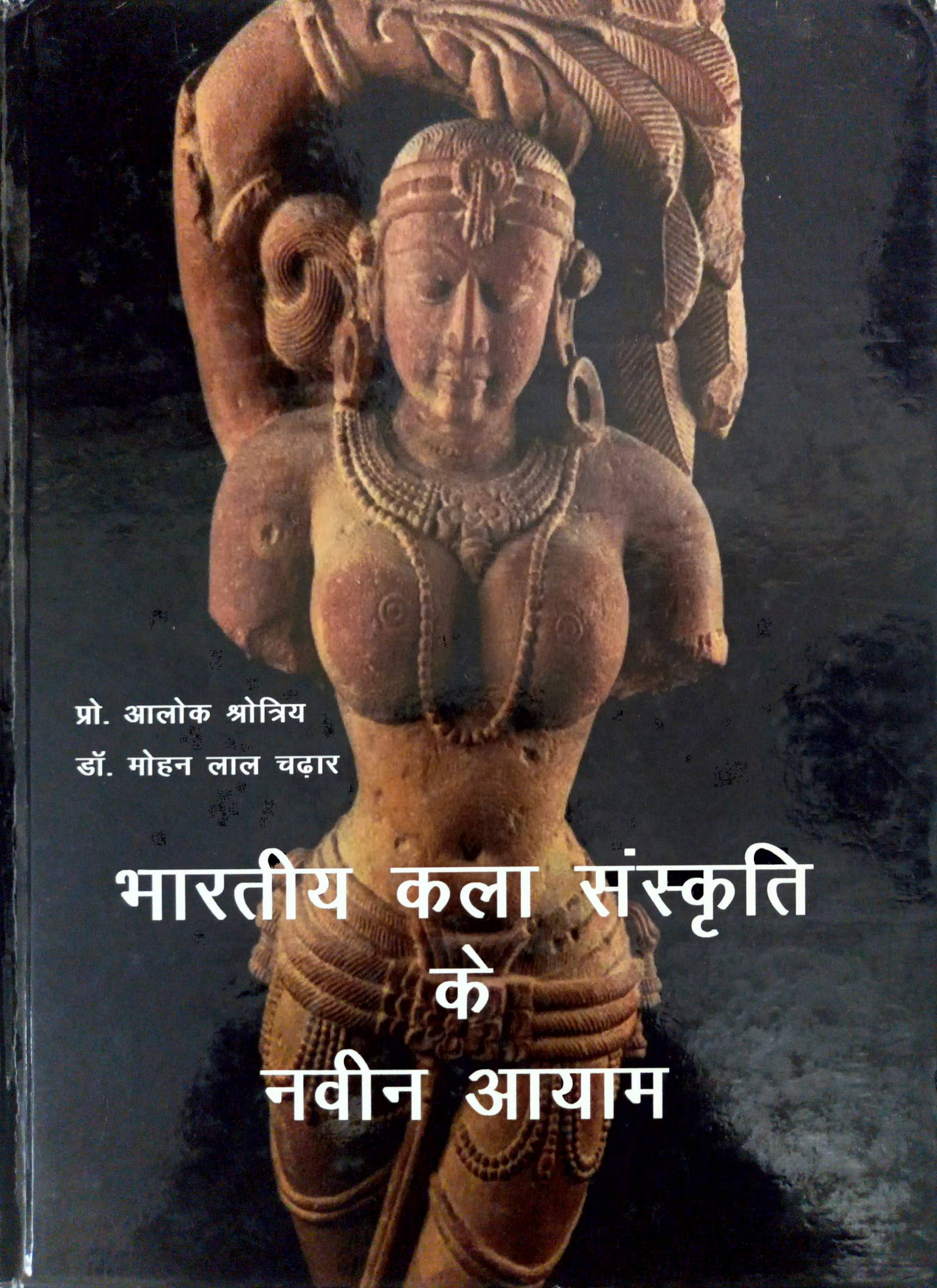

प्रो. आलोक श्रोत्रिय
डॉ. मोहन लाल चढ़ार

भारतीय कला संस्कृति के नवीन आयाम

Published by
S.K. BOOK AGENCY
5A/12, Ansari Road, Daryaganj,
New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-47520102
E-mail: skbook9@gmail.com

भारतीय कला संस्कृति के नवीन आयाम

© आलोक श्रोत्रिय एवं मोहन लाल चढ़ार

₹ 2800.00

सर्वाधिकार सुरक्षित। पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण 2018

ISBN: 978-93-8315-889-8

Printed at New Delhi, India

इस पुसत्क में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादकगण प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नही है

2 मढ़पिपरिया का शैव मूर्तिशिल्प

नागेश दुबे

सागर नरसिंहपुर राष्ट्रीय मार्ग क्रमांक 26 पर सागर से लगभग 79 कि.मी. दक्षिण में तीतरपानी ग्राम स्थित है। इस ग्राम से 4 कि.मी. लंबा मार्ग मढ़ पिपरिया नामक प्राचीन केन्द्र को जाता है। इस ग्राम में सर्वत्र पूर्व मध्य युगीन प्रतिमाओं और मंदिरों के स्तंभ बिखरे हुए हैं। ग्राम में लगभग मध्य में दीवान साहब के मकान के पीछे एक बड़ा टीला है। इस टीले पर 5 मध्य कालीन मंदिरों के अवशेष देखे जा सकते हैं। दीवान साहब के मकान के सामने एक कच्चे देव मंदिर के अंदर और उसके समीप प्राचीन प्रतिमाएं स्थापित हैं। ग्राम की पश्चिमी दिशा में एक छोटे नाले तथा प्राकृतिक जलस्त्रोत के समीप सिद्धेश्वर मठ निर्मित है। ग्राम की उत्तर पूर्वी दिशा में लगभग आधा कि.मी. दूर मढ़ के नाम से ज्ञात एक नष्ट प्रायः प्राचीन मंदिर स्थित है। उसके समीप पीपल वृक्ष के नीचे खेर माई नामक स्थान में कुछ प्रतिमाएं रखी हैं। ग्राम के पूर्व में लगभग 400 मीटर दूर दो मध्ययुगीन शिवलिंग स्थापित हैं। इस ग्राम में मध्यकालीन एकाधिक मठ निर्मित थे और संभवतः उन दिनों पीपल के वृक्षों का आधिक्य था इसलिए इसे मढ़ पिपरिया की संज्ञा दी गयी।

देव प्रतिमाएं

मढ़ पिपरिया में मध्य कालीन देव प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। ब्राह्मण धर्म के विभिन्न मतों के साथ–साथ जैन धर्म का प्रचार भी वहां हुआ था। वैष्णव, जैन तथा शाक्त प्रतिमाओं के साथ ही जैन तीर्थकारों की प्रतिमाएं भी मध्यकाल में प्रतिष्ठित की गयी थी। सभी जैन मंदिर भूमिसात हो गए हैं। विभिन्न धर्मावलंबियों के मध्य विद्यमान पारस्परिक सद्भाव की परिचायक सम्बन्धित देवताओं की मध्य कालीन प्रतिमाएं मढ़ पिपरिया में निर्मित की गयी थी। उपलब्ध प्रतिमाओं की मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है– 1. ब्राह्मण प्रतिमाएं 2. जैन प्रतिमाएं।

ब्राह्मण प्रतिमाओं के अंतर्गत शैव, वैष्णव और शाक्त देवी देवताओं के अतिरिक्त गौण देवताओं की प्रतिमाएं भी हैं।